जूलियस न्यूरेरे की उजमा की संकल्पना : एक समीक्षा

डॉ० प्रशांत कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान
तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर
(उ०प्र०)

सारांश –

न्यूरेरे तंजानिया तथा अफ्रीका ही नहीं अपितु तृतीय विश्व के एक महान नेता थे। उन्होंने तंजानिया में एक नए समाज के निर्माण के लिए यूरोपीय समाजवाद तथा पूंजीवाद को नकारते हुए परंपरागत अफ्रीकी समाज के मूल्यों के आधार पर तंजानिया के विकास का एक नया मॉडल प्रस्तुत किया, जिसे उजमा का नाम दिया गया। अरुशा घोषणा 1967 के द्वारा इसे लागू करने का प्रयास किया गया। इसके कुछ सकारात्मक परिणाम आए, लेकिन यह पूर्णत सफल योजना नहीं रही। 1985 में न्यूरेरे ने भी इसकी आलोचना की, लेकिन फिर भी यह तृतीय विश्व के विकास का एक महत्वपूर्ण मॉडल था, जो कि देशी परिस्थितियों और मूल्यों पर आधारित था, न कि यूरोप से आयातित विचार था।

मुख्य शब्द – उजमा, न्यूरेरे, समाजवाद, अरुशा घोषणा पत्र, परंपरागत अफ्रीकी परिवारिक मूल्य।

प्रस्तावना –

तेजानिया पूर्वी अफ्रीका में स्थित एक देश है। जूलियस कैम्बार्गे न्यूरेरे को तंजानिया का राष्ट्रपिता (Baba ya taifa in Ki-swahili) कहा जाता है। लोग उन्हें प्यार से मवालीमू Mwalimu (The Teacher in Ki-Swahil) भी कहते थे। वे तंजानिया के पहले राष्ट्रपति बने। वे दक्षिण आयोग के अध्यक्ष भी रहे। वे अपने समय के अफ्रीका के एक बुद्धिमान और सम्माननीय व्यक्ति थे। 1961 में स्वतंत्रता के बाद तंजानिया का समग्र विकास जिस आदर्श और सिद्धांत के आधार पर न्यूरेरे करना चाहते थे उसे ही उन्होंने उजमा (Ujamaa) का नाम दिया।

न्यूरेरे का जन्म 1922 में विक्टोरिया झील के तट पर स्थित बूतियामा नामक गांव में एक कबीले के सरदार के घर हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा मैकेरेरे कॉलेज में फिर तबोरा के कैथोलिक स्कूल में हुई। स्नातक और परास्नातक (इतिहास और अर्थशास्त्र, 1952) की शिक्षा एडिनबर्ग विश्वविद्यालय स्कॉटलैंड से हुई।

1954 में न्यूरेरे ने पहले राष्ट्रवादी पार्टी तांजानिका अफ्रीकन नेशनल यूनियन (TANU) की स्थापना की। 1958 और 1960 के चुनाव में तनु ने सभी सीट जीत ली। 1960 में न्यूररे तंजानिका के प्रधानमंत्री बने। तांजानिका को 1961 में TANU ब्रिटेन के उपनिवेश से स्वतंत्रता प्राप्त हो गई। 1962 में तांजानिका गणतंत्र बन गया। 1963 में जंजीबार में नृजाति संघर्ष प्रारंभ हो गया तो न्यूरेरे ने ब्रिटेन की मदद से इस संघर्ष को समाप्त करके तांजानिका और जंजीबार को मिलाकर 1964 में संयुक्त तंजानिया गणतंत्र का निर्माण किया तथा न्यूरेरे तंजानिया के पहले राष्ट्रपति बने और 1884 तक इस पद पर रहे। 1967 में 'आरुषा घोषणा' न्यूरेरे द्वारा की गई, जिसका आधार उजमा सिद्धांत को बनाया गया और इसका उद्देश्य तंजानिया के विकास के लिए नीति और कार्यक्रम का मार्गदर्शन करना था।

उजमा का अर्थ –

उजमा स्वाहिली भाषा का शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ पारिवारिकता या बांधुता होता है। न्यूरेरे ने इस शब्द का प्रयोग तंजानिया में स्थापित किए जाने वाले समाजवादी समाज के लिए किया। न्यूरेरे समाजवाद से प्रभावित थे, लेकिन उजमा की संकल्पना समाजवाद की पर्यायवाची नहीं है। बल्कि यह शब्द परंपरागत अफ्रीकी मूल्य पर आधारित समाज को व्यक्त करता है, जिसकी स्थापना न्यूरेरे करना चाहते थे।

व्यापक रूप से उजमा का अर्थ सहकारी अर्थव्यवस्था से है। जिसका अर्थ है कि स्थानीय लोगों द्वारा जीवन की आवश्यक वस्तुओं के आदान प्रदान करने के लिए एक दूसरे के साथ सहयोग करना या अपनी खुद की दुकान और व्यवसाय बनाना और उससे एक साथ लाभ कमाना। उजमा के तीन मुख्य कारक हैं– पारस्परिक सम्मान, संपत्ति पर समान स्वामित्व और कार्य का समान दायित्व।

संक्षेप में, उजमा कृषि आधारित आत्मनिर्भता के विकास को रणनीति है और जिसका क्रियान्वयन सहकारी सोसाइटी तथा उजमा (सामुदायिक) गांवों के द्वारा किया गया।

उजमा तथा समाजवाद व उदारवाद –

इस प्रकार उजमा एक प्रकार का अफ्रीकी समाजवाद है जो कि यूरोपीय समाजवाद और पूंजीवाद से भिन्न है। वे पूजीवाद का विरोध करते है क्योंकि पूजीवाद मानव के मानव पर शोषण के आधार पर एक सुखमय समाज का निर्माण करना चाहता है। इसी प्रकार यह उजमा यूरोपीय समाजवाद का भी विरोध करता है क्योंकि यह मनुष्य और मनुष्य के बीच अपरिहार्य संघर्ष के आधार पर सुखमय समाज का निर्माण करना चाहता है। इसीलिए न्यूरेरे का विचार घाना के क्वामे नक्रूमा और माली के मोदीवो केता दोनों से अलग है क्योंकि ये दोनों रूढ़िवादी मार्क्सवाद – लेनिनवाद पर आधारित वैज्ञानिक समाजवाद के अनुपालन की बात करते थे।

न्यूरेरे पूजीवाद के व्यक्तिगत स्वामित्व की अवधारणा से सहमत नहीं हैं। उन्होंने कहा अफ्रीकी समाज में परंपरागत रूप से भूमि का स्वामित्व समुदाय का ही होता था। समाज का नेता जनता को उनकी आवश्यकता के आधार पर भूमि उपयोग की अनुमति देता था।

उजमा तथा परम्परागत अफ्रीकी समाज –

न्यूरेरे का मानना है कि परंपरागत अफ्रीकी समाज मौलिक रूप से समाजवादी प्रकृति का है। समाजवादी सिद्धांतों के अनुरूप ही संगठित है। परंपरागत अफ्रीकी समाज में प्रत्येक व्यक्ति कामगार था। यहां का प्रत्येक सदस्य दूसरे को सुरक्षा की भावना प्रदान करता है, यहां अतिथियों का सम्मान दिया जाता है। समाज की संपदा में सभी सदस्यों का सामूहिक अधिकार होता है।

उजामा तीन सिद्धांत हैं – समानता, स्वतंत्रता और एकता। परंपरागत परिवार में तीनों सिद्धांत/मूल्य पाए जाते थे, परिवार में सभी सदस्य समान महत्व के माने जाते थे, सबकी अपनी विशेष भूमिका थी। परिवार सभी सदस्यों के जन्म से मृत्यु तक सभी आवश्यकताएं पूरी करता था। सभी सदस्य एक दूसरे को सुरक्षा भी प्रदान करते थे। संपत्ति भी व्यक्तिगत न होकर सामूहिक होती थी। सभी एक दूसरे के सुख और दुख में सुखी और दुखी होते हैं। परिवार का

मुखिया सभी समान में प्रथम होता था। इन्हीं मूल्यों के कारण न्यूरेरे का मानना है कि यही परंपरागत अफ्रीकी परिवार की इकाई तंजानिया के नए सामाजिक तथा आर्थिक व्यवस्था का आधार बनेगी।

अफ्रीकी समाजवाद का मूल विस्तृत परिवार ही है। परंपरागत अफ्रीकी समाज में 'समाज'को परिवार का विस्तार ही माना जाता था, आज का अफ्रीकी समाजवाद इसी पर आधारित है। न्यूरेरे का मानना है कि हमें परंपरागत मूल्य को ही अपने नए वांछित समाज का आधार बनाना चाहिए।

उनका मानना है कि समाजवाद एक मानसिक दृष्टि (Attitude of Mind) है। समाजवादी समाज में समाजवादी सोच ज्यादा महत्वपूर्ण है न कि किसी निर्धारित राजनीतिक प्रणाली को अपनाना। समाजवाद सार्वभौमिक है यह एक मानवीय संकल्पना है, जिसका संबंध न केवल तंजानिया और अफ्रीका से है बल्कि संपूर्ण मानवता से है। हमारे परिवार की भावना और पहचान का विस्तार होना जरूरी है। इसका विस्तार न केवल नृजाति, समुदाय, राष्ट्र, अफ्रीका अपितु संपूर्ण मानवता तक इसका विस्तार होना चाहिए। संपूर्ण मानव ही एक परिवार है यही समाजवाद है।

उजमा तथा व्यक्ति –

उजमा में मानव समानता की अवधारणा में मनुष्य ही केंद्र में हैं, सभी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विकास का आधार मनुष्य ही है। सभी सामाजिक क्रियाओं का उद्देश्य मानव का हित ही है। मानव की सेवा ही समाज का स्वयं का भी उद्देश्य है। उजमा समाजवाद मानव की एकता और सामन ऐतिहासिक लक्ष्य के विश्वास पर ही आधारित है।

उजमा और लोकतंत्र –

न्यूरेरे उनपिवेशवाद के विरोधी और लोकतंत्र के समर्थक हैं। उन्होंने 1964 में तंजानिया में गणतंत्र की स्थापना भी की, लेकिन वे लोकतंत्र पश्चिमी को अपना आदर्श नहीं मानते। वे एक दलीय शासन व्यवस्था के समर्थक है उन्होंने TANU के अलावा अन्य किसी दल को मान्यता नहीं दी। उनका मानना था कि जब तंजानिया के विकास पर आम सहमति है तो अन्य दल की कोई आवश्यकता नहीं है। दूसरा दल होने पर वैचारिक मतभेद उत्पन्न होगा और आर्थिक विकास बाधित होगा। उनका मानना है कि लोकतन्त्र के तीन मुख्य मूल्य हैं– प्रथम, समानता लोकतंत्र का प्राथमिक मूल्य है बिना समानता के समाज का विघटन हो जायेगा और दासता आ जाएगी। द्वितीय, सभी को काम मिलना चाहिए ताकि अर्थव्यवस्था में सभी की भागीदारी हो सके। तृतीय, गरीबी का उन्मूलन करना। इसके लिए राज्य को राष्ट्र के आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण रखना जरूरी है। इन सब के लिए दो या अधिक दलों की आवश्यकता नहीं है बल्कि एक दल ही ये सारे कार्य कुशलता से कर सकता है।

उजमा का क्रियान्वयन –

1967 में न्यूरेरे ने आरुषा घोषणा पत्र के द्वारा उजामा की संकल्पना पर आधारित समाजवाद को क्रियान्वित करने का प्रयास किया। आरुषा घोषणा पत्र तंजानिया में नए समाज के निर्माण का आधारभूत ढांचा प्रस्तुत करता है। यह ऐसे विकास की रणनीति है जो कि

आत्मनिर्भरता और तंजानिया के लोगों के आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति पर आधारित है। इसलिए राज्य का प्राथमिक उद्देश्य विनिर्माण करना फिर यह सुनिश्चित करना कि समाज के सभी सदस्यों की आधारभूत आवश्यकता जैसे रोटी कपड़ा और मकान आदि की पूरी की जा सके। सरकार को अपने संसाधनों को गरीबी अशिक्षा और बीमारी को दूर करने के लिए लगाना चाहिए। इसके लिए सरकार का उत्पादन के साधनों पर पूर्ण नियंत्रण होना जरूरी है। अर्थव्यवस्था पर राज्य का नियंत्रण होना जरूरी है। इसीलिए कृषि का समूहीकरण किया गया और 1971 में अर्थव्यवस्था के प्रमुख उद्योग और बैंकों का भी राष्ट्रीयकरण किया गया। इसी को लागू करने के लिए 1970 में स्वैच्छिक ग्रामीकरण कार्यक्रम लागू किया गया ताकि कृषि का समूहीकरण किया जा सके। 1975 में कृषकों के विरोध के कारण जबरन ग्रामीकरण कार्यक्रम शुरू किया गया। जल्दी ही 80 प्रतिशत जनसंख्या 7700 ग्रामों में संगठित हो गई। पंचवर्षीय योजना भी शुरू की गई। 1973 से 1975 तक सात मिलियन से अधिक लोगों को स्थांतरित किया गया, और जून 1975 से 1976 के अंत तक चार मिलियन से अधिक लोगों को नई बस्तियों में बसाया गया।

उजमा गांवों का निर्माण विशेष तरीकों से किया गया था ताकि समुदाय और आर्थिक आत्मनिर्भरता पर जोर दिया जा सके। गांवों की संरचना में केंद्रीय पंक्ति में घर बनाए गए थे। जिसमें केंद्र परिसर के रूप में एक स्कूल और एक टाऊनहाल था। ये गांव बड़े सामुदायिक कृषि फार्मों से घिरे थे।

उजमा का प्रभाव –

इन प्रयासों के कई सकारात्मक परिवर्तन देखे गए। शिशु मृत्यु दर 1965 में प्रति 1000 जीवित जन्मों पर 138 से घटकर 1985 में 110 हो गई। जन्म के समय जीवन प्रत्याशा 1960 में 37 से बढ़ कर 1984 में 52 हो गई। प्राथमिक स्कूल में नामांकन 1060 में आयु वर्ग के 25 प्रतिशत (केवल 16 प्रतिशत महिला) से बढ़ कर 1985 में 72 प्रतिशत (महिला 85 प्रतिशत) हो गया। (तेजी से बढ़ती आबादी के बावजूद) वयस्क साक्षरता दर 1960 में 17 प्रतिशत से बढ़कर 1985 में 90 प्रतिशत तक बढ़ गई।

लेकिन इस योजना ने अनेक तंजानिया के समाज में अनेक नकारात्मक प्रभाव भी डाला। जबरन ग्रामीकरण से कृषि उत्पादन में तीव्रता से कमी आई। किसानों ने अपने व्यक्तिगत खेतों को छोड़कर सामूहिक जीवन जीने का विरोध किया क्योंकि व्यक्तिगत पूजी की कमी हो गई। 1967 में राष्ट्रीयकरण ने सरकार को देश का सबसे बड़े नियोक्ता में बदल दिया। क्रय शक्ति में गिरावट आई। विश्व बैंक के शोध कर्ताओं के अनुसार उच्च कारों और नौकरशाही ने ऐसा माहौल बनाया जहां व्यवसाई चोरी रिश्वत और भ्रष्टाचार का सहारा लेने लगे।

न्यूरेरे ने स्वयं ही उजामा की कमियों को उजागर किया है। उनका कहना है कि वर्तमान जटिल अफ्रीकी समाज में परंपरागत परिवार और परिवारिक मूल्यों का अस्तित्व नहीं है। आज समाज का केंद्रीय उद्देश्य व्यक्ति होने के बजाय अमूर्त प्रत्यय जैसे राष्ट्र झंडा और यहां तक कि ईश्वर हैं। इसलिए व्यक्ति का महत्व कम हो जाता है। फिर समाज में पूंजीवादी व्यवस्था के कारण आर्थिक असमानता बहुत बढ़ गई है।

निष्कर्ष –

न्यूरेरे के उजमा के विचार ने अफ्रीकी समाज को आर्थिक विकास का एक नया मॉडल प्रदान किया। यह ऐसे आर्थिक विकास का मॉडल था जो परंपरागत अफ्रीकी समाज के विचार और मूल्यों पर आधारित था। न्यूरेरे ने न केवल उपनिवेशवाद का विरोध किया बल्कि आयातित यूरोपीय विचारों तथा औपनिवेशिक विचारों का भी विरोध किया। वह उजामा के विचार द्वारा तंजानिया तथा अफ्रीका में नए समाज का निर्माण करना चाहते थे, जो की स्वदेशी विचारों और मूल्यों पर आधारित था। यह तृतीय विश्व के लिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस विचार द्वारा न्यूरेरे ने यह बताने का प्रयास किया कि हमें अपने समाज का निर्माण औपनिवेशिक विचारों व आयातित विचारों पर ना करके स्वदेशी विचार व मूल्यों पर करना चाहिए। इसके द्वारा न्यूरेरे ने न केवल अपने राष्ट्र का तीव्र आर्थिक विकास किया बल्कि अपनी संप्रभुता तथा स्वास्थ्य विदेश नीति की भी रक्षा की। न्यूरेरे स्वयं भी विश्व में प्रसिद्ध हो गए।

संदर्भ सूची

1. Martin, Guy (2012) African Political Thought, Palgrove Macmillan Publication, London.
2. Macpherson, C.B. (1962) The Political Theory of Possessive Individualism : Hobbes to Locke, Oxford University Press, London.
3. Delehanthy, Sean (2020) "From Modernization to Villagization: The World Bank to Ujamaa" Diplomatic History, New York.
4. Lal Priya (2010) "Militants, Mothers and The National Family: Ujamaa, Gender and Rural development in Post- Colonial Tanzania" Journal of African Studies, Cambridge University Press, London.
5. Pratt, Cranford (1999) "Julius Nyerere : Reflection on the legacy of his Socialism" Canadian Journal of African Studies, Canada.